CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

# शिक्षा कार्यक्रम में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास

**प्रियंका शर्मा**
पीएचडी शोधार्थी
**डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय**
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

First draft received: 15.09.2024, Reviewed: 18.09.2024, Final proof received: 21.09.2024, Accepted: 23.09.2024

## सार संक्षेप

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की ररूपरेखा 2005 की अपेक्षा है कि सृजनात्मक सन्दर्भ में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रकिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों से उपलब्ध सामग्री गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते है हर बच्चा सीखना चाहता है कई तरीके हो सकते है सृजनात्मकता एक अद्भुत एवं मनोहारी योग्यता होती है जो सभी प्राणियों में पायी जाती है। सृजनात्मकता (ब्तमंजपअपजल) व्यक्ति वह योग्यता है जिसके द्वारा किसी नये विचारो या नई वस्तु का निर्माण होता है। सृजनात्मकता का उपयोग शिक्षा में किया जाता हैं। इस के लिए स्जनशील बालको की पहचान आवश्यक हैं।

**प्रस्तावना**

सभी बच्चों में सृजनात्मक क्षमता होती है यद्यपि उसकी श्रेणी में अंतर हो सकता है। बच्चों को जितना ज्ञान और अनुभव दिया जाएगा अपने सृजनात्मकता प्रयासो के लिए उन्हे उतनी ही सुदृढ नींव मिलेगी। एक प्रेरक वातावरण बच्चे की सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है।

सृजनशीलता की कल्पना, चिन्तन, उत्पादन आदि की दृष्टि से देखा जाता है। किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन सृजन कहलाता है। कला, साहित्य और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में सृजनात्मकता का एक–दूसरे से घनिष्ट सम्बध हैं बच्चो में सृजनात्मकता अभिव्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा का अनिवार्य कर्तव्य है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की ररूपरेखा 2005 की अपेक्षा है कि सृजनात्मक सन्दर्भ में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रकिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों से उपलब्ध सामग्री गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते है हर बच्चा सीखना चाहता है कई तरीके हो सकते है सृजनात्मकता एक अद्भुत एवं मनोहारी योग्यता होती है जो सभी प्राणियों में पायी जाती है। सृजनात्मकता (ब्तमंजपअपजल) व्यक्ति वह योग्यता है जिसके द्वारा किसी नये विचारो या नई वस्तु का निर्माण होता है। सृजनात्मकता का उपयोग शिक्षा में किया जाता हैं। इस के लिए स्जनशील बालको की पहचान आवश्यक हैं।ऐसे बालको की पहचान के लिए निम्न बातो का ध्यान रखना चाहिए–

1. सृजनशील बालको में मौलिकता एवं नवीनता का अद्भुत गुण होता है।
2. इनमें जिज्ञासा की मात्रा अधिक होती है इसी कारण ये हर कार्य और प्रश्न का पूर्ण उत्तर चाहते हैं।. ।
3. इनमे सामान्य बात पर ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति होती है सामान्य बालक इन सामान्य बातो की अवहेलनां कर देते हैं, किन्तु सृजनशील इन बातों पर ध्यान देता है।
4. संवेदनशीलता के कारण प्रत्येक कार्य को गंभीरता से लेते है।
5. ये कार्यो में व्यवहारिक, परिश्रमी एवं लगनशील होते हैं।

बालक की सृजनात्मक अभिव्यक्ति

''सृजनात्मकता'' प्रत्येक बच्चे में प्राकृतिक गुण के समान विद्यमान रहता है । सृजनात्मकता एक मानसिक पक्रिया है जिसमें नये विचारों का जन्म होता है, जिसमें मौलिकता समसामयिक दोनों होते हैं। सृजनात्मक लोग जिज्ञासु होते हैं जिज्ञासा ही सृजनात्मकता और ज्ञान का बीज होती है – सृजनात्मकता आसानी से नजर आ जाती हैं, किन्तु इसकी अभिव्यक्ति हेतु विशेष वातावरण आवश्यक होती हैं। शिक्षको को चाहिए कि वे बच्चो की सृजनात्मक अभिव्यक्ति ऐसे वातावरण निर्माण करे जिसमें उसके चिन्तन एवं उसकी सक्रियता को बढ़ावा मिले। शिक्षक कक्षा मे निम्न गतिविधियो के माध्यम से बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास कर सकते है–

1. कला के द्वारा सृजनात्मक अभिव्यक्ति

ऐसी क्रियाएँ करना जैसे कि चित्रकला एवं रंग भरना, छापना, फाडना, और चिपकाना, कोलाज का काम मिट्टीं का काम इत्यादि।

2. लय, ताल और संगीत की अभिव्यक्ति–

सद्दिहिया स्वरूप उठती है शब्दो और संगीत के प्रतिक्रियो स्वरूप बच्चों के मन में जो भावनाएँ, उठती हैं, उन्हे वे शारीरिक गतिविधियों तथा भंगिमाओं आदि से व्यक्त करते है। उन्हें ऐसे अवसर दे कि लय, ताल के माध्यम से बच्चे स्वतंत्रतापूर्वक शारीरिक गतिविधियाँ तथा भंगिमाएँ व्यक्त कर सके जैसे संकेत गान एवं उंगलियों के खेल।

3. सृजनात्मक नाटक

विभिन्न प्रकार की लय और गति वाला संगीत बजाएँ बच्चों से कहे कि वे धुन पर जिस प्रकार चाहे अपने शरीर को हिलाए। बच्चो को कोई निर्देश या संकेत दे कि जिससे उसके मन में कोई दृश्य चिन्ह उपस्थित हो जाए जैसे– एक हाथी जंगल में घूम रहा है या एक तितली एक फूल से दुसरे फूल पर घूम रही है आदि उनसे कहे कि हाथी की तरह घुमो, तितली तरह पंख फैला कर उड़ो इत्यादि।

4. सृजनात्मक चिन्तन

बच्चो से ऐसे प्रश्न पूछे जिनके कई संभावित उत्तर हो सकते है उनके प्रवाह के साथ अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए उत्तर दे सके विशेष रूप से नाटकीय या काल्पनिक खेल तथा स्चनात्मक खेल सृजनात्मक को बढ़ावा देते हैं।

**शिक्षण की सृजनात्मक विधिया**

छात्र के जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है शिक्षा से छात्र के व्यक्तित्व में निखार आता है और शिक्षा से ही छात्र के भविष्य के लिए अपने आप को तैयार कर सकता है। शिक्षण विधियाँ ऐसी होनी चाहिए कि छात्रो को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करें न कि वह अपने माता–पिता से डर कर स्कूल जाएँ, शिक्षण विधियॉ छात्रों को रोचक ज्ञान अर्जित इसे में सहायक हो सकते है इस हेतु शिक्षक अपने छात्रो बौद्धिक स्तर व मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर निम्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करता हैं–.

1. क्रियाकलाप आधारित विधि

आज के वातावरण को ध्यान में रखकर जरूरी है कि छात्रो के लिए ऐसे क्रियाकलाप का विकास किया जाये जिममें सभी छात्र अधिक से अधिक भाग ले सके। जैसे– करके सीखो, अनुभवात्मक छात्र की सक्रिय भूमिका इत्यादि। यह छात्रो के पूर्ण विकास में सहायक हो उसमें सोचने की क्षमता का विकास हो एक अच्छी शिक्षण विधि वही होती है जो छात्रो को सोचने की क्षमता का विकास करें व उसका मनोरंजन भी करें। क्रियाकलाप पाठ्यचर्या पर केन्द्रित हुई। वही दूसरी तरफ इस पर सामाजिक प्रभाव भी होता हैं । शिक्षक क्रियाकलाप में सभी छात्रो को भाग लेने का अवसर देता है जिससे उसकी प्रतिभा का विकास होता है।

2. खेल खेल में शिक्षा

खेल छात्र की स्वाभाविक प्रक्रिया हैं। खेल–खेल मे छात्र बहुत सी बाते सीखते हैं। जो कि उसे जीवन में आगे बढ़ने में मदद करती है। प्रश्नोतर, क्विज, शब्दों का खेल, वाद विवाद गीतों का आयोजन इस तरह के खेल छात्रो 'को भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होते हैं। स्वाध्याय और भाषा के विकास के लिए बाल पुस्तके, शब्दकोष, सामूहिक वार्तालाप एक अच्छा माध्यम है।

3. कहानी वाचन (सुनाना)

कहानी सुनना छात्रो को हमेशा से ही प्रिय लगता हैं जिसमें छात्रो का समय भी गुजर जाता हैं और उबाक पकाने वाला भी नहीं लगता है कहानी शिक्षण के माध्यम से कुछ तथ्यों को भांति समझाया जा सकता है जैसे – सामाजिक विज्ञान नैतिक ज्ञान आसपास के वातावरण के प्रति जागरकता आदि ।

4. स्व शिक्षण

शिक्षक छात्रो को कुछ वस्तुए एकत्रित करने को कहे जैसे– अनाज, दाले, बीज, लकड़ी तथा साथ ही उन वस्तुओ कि सूची बनाते हुए कि वह कहाँ से उत्पन्न होती हैं उनका उपयोग किस प्रकार से किया जाता है इत्यादि। कक्षा में छात्रो की स्वयं द्वारा एकत्रित वस्तुओं को सभी को दिखाएँ और उनके बारे में चर्चा करे ।

5. अवलोकन

शिक्षक छात्रों को अपने आस पास की वस्तुओं का निरीक्षण करने को कहे तथा उनमे से किसी एक विषय पर लिखने को कहे जो उन्होने स्वयं देखी अवलोकन के समय अर्जित किया गया ज्ञान छात्रो को अपने आसपास के वातावरण के बारें में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता हैं।

6. चित्रकला

यह वह कौशल है जो किसी भी वस्तु को आकर्षक बना देता यह सबसे ज्यादा रोचक शिक्षण विधि है। चित्र के द्वारा अर्जित ज्ञान छात्र के मस्तिष्क में एक छवि बना लेता है जो कि अलग–२ बिंदुओं को आपस में जोड़कर उसकी विश्लेषण की योग्यता को बढ़ावा देते है।

7. गीत संगीत

गीत–संगीत प्राथमिक शिक्षण के लिए अति आवश्यक होता हैं। शिक्षक कुछ शिक्षाप्रद गीत इकट्ठे कर छात्रो को सुनाता हैं छात्र उन शिक्षाप्रद गीतो को सुनकर उन्हे छात्र उचित लय ताल के साथ दोहराता शिक्षण होता है। संगीत शिक्षा के बिना कोई भी शिक्षण प्रणाली अधूरी है। सृजनात्मकता के उचित विकास व अभिव्यक्ति के लिए संगीत होना आवश्यक है।

8. रूचि कक्षा (हॉबी क्लासेज)

रूचि कक्षाएँ जैसे वाद–विवाद, डामा, नृत्य संगीत, चित्रकला आदि के रूप में आयोजित की जाती हैं इन का आयोजन हफ्ते में 2 घण्टे का होना चाहिए। प्रत्येक छात्र अपनी इच्छा से किसी भी को लेकर आगे बढ. सकता हैं। इसमें सभी छात्रों को अपने बारें में जानने का मौका मिलेगा जो उसमें आत्मविश्वास बढाने में सहायक होगा।

9. वाद विवाद

वाद विवाद में छात्र किसी विषय को लेकर उसके पक्ष और विपक्ष मे अपने विचार रखते हैं। जिससे छात्रों को अपने विचारो को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता हैं जिससे छात्रों में तर्कशक्ति व बौद्विकता का विकास होता हैं।

**सृजनात्मकता के विकास में शिक्षक की भूमिका**

सृजनात्मकता के विकास में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों की कल्पना का संसार बहुत की व्यापक है। अतः शिक्षको का संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है साथ ही बच्चों की कल्पना नवाचार क्षमता तथा उनकी सहभागिता को बढ़ाने के लिए उसे उत्प्रेरक के रूप में कार्य चाहिए एक शिक्षिका को प्रत्येक बच्चे पर पूरा विश्वास हो और उसे ज्ञात हो कि प्रत्येक बच्चा सृजनात्मक है। यथा–

1. बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नता होती है उसे समझे और उसका आदर करे ।
2. बच्चो को अपने विचार और भावनों को स्वेच्छापूर्वक व्यक्त करने दे।
3. हर बच्चे के प्रयासों की सराहना करे चाहे उसमे सुधार की बहुत अधिक संभावना हो।
4. बच्चों को कला और अभिव्यक्ति की नकल करने के लिए प्रोत्साहित न करे। बच्चो को बने बनाए नमूने कट– आउटस आदि यथा संभव न दे जिससे वे केवल नकल कर ले । इसमे बच्चो की सृजनात्मक क्षमता कुंठित हो जायेगी

**निष्कर्ष**

सृजनात्मकता की सहज अभिव्यक्ति हेतु एक मुक्त वातावरण होना अत्यावश्यक हैं ऐसे वातावरण में बच्चे की छानबीन करने की वस्तुओ से खेलने की कुछ बनाने की और यहॉ तक कि कुछ नष्ट करने की भी स्वतंत्रता होनी चाहिए। सृजनात्मकता के विकास में खेल एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ**

1. कौल विनीता 1996 प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्षम NCERT – दिल्ली।
2. प्रसाद देवी 2005 शिक्षा का वाहन कला नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
3. पुष्प लता वर्मा 2015 भारतीय आधुनिक शिक्षा।
4. प्रमोद दीक्षित ''मलय'' प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद पत्रिका।